

हृदय-प्रशांत क्षेत्र में यूरोप की भूमिका

इस Editorial में The Hindu, The Indian Express, Business Line आदि में प्रकाशित लेखों का विश्लेषण किया गया है। इस लेख में हृदय-प्रशांत क्षेत्र में भारत और यूरोपीय देशों के बीच रणनीतिक सहयोग को बढ़ाने की आवश्यकता व इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। आवश्यकतानुसार, यथास्थान टीम दृष्टिकोण के इनपुट भी शामिल किये गए हैं।

संदर्भ:

एशिया में चीन के एक महाशक्ति के रूप में उभरने के साथ ही इसने क्षेत्र के शक्ति संतुलन को भी प्रभावित किया है। हाल में [वास्तविक नियंत्रण रेखा](#) (LOC) पर चीनी सेना के साथ संघर्ष की स्थिति और हृदय महासागर क्षेत्र में चीन की आक्रामकता ने भारत के लिये एक गंभीर भू-रणनीतिक चुनौती खड़ी कर दी है। ऐसे में चीनी आक्रामकता का दृढ़ता से मुकाबला करने के लिये अंतरराष्ट्रीय गठबंधनों को मजबूत करना भारतीय विदेशी एवं सुरक्षा नीतिको एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता होगी। इस संदर्भ में अमेरिका (USA) भारत के लिये एक महत्वपूर्ण सुरक्षा सहयोगी बन गया है। हालाँकि अमेरिकी नीतिको राजनीतिक अनिश्चितता से बचने के लिये भारत को रणनीतिक रूप से यूरोपीय शक्तियों के साथ सहयोग (विशेष रूप से [हृदय-प्रशांत क्षेत्र](#) के संदर्भ में) को बढ़ाना होगा।

हृदय-प्रशांत क्षेत्र में यूरोपीय देशों के साथ सहयोग के हालिया प्रयास:

- हृदय-प्रशांत क्षेत्र से जुड़े हालिया तीन घटनाक्रम यूरोप के प्रति भारत की बदलती रणनीतिक धारणा को रेखांकित करते हैं:
 - पहला, [हृदय महासागर रमि एसोसिएशन](#) (Indian Ocean Rim Association - IORA) में फ्रांस की सदस्यता के लिये भारत का समर्थन।
 - दूसरा, हृदय-प्रशांत क्षेत्र में यूरोप की बढ़ी भूमिका के लिये भारत की सहमति। भारत ने हृदय-प्रशांत में एक नए भू-राजनीतिक तंत्र के निर्माण के लिये जर्मनी और नीदरलैंड की इच्छा का स्वागत किया है।
 - तीसरा, हृदय-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा सहयोग भारत और ब्रिटेन के बीच संबंधों में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में भी उभर रहा है।

हृदय-प्रशांत क्षेत्र में भारत-यूरोप सहयोग का महत्त्व:

- बहु-ध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था: वर्तमान में भारत द्वारा अमेरिका और चीन के बीच द्विध्रुवीय प्रतिस्पर्धा से परे एक बहु-ध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था की स्थापना पर कार्य करने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
- गैर-क्षेत्रीय शक्तियों की भागीदारी का स्वागत: भारत क्षेत्रीय और गैर-क्षेत्रीय कारकों से प्रभावित अपने पूर्व के हृदय-प्रशांत दृष्टिकोण से स्वयं को अलग कर रहा है।
- उत्तर-औपनिवेशिक मानसिकता से प्रस्थान: भारत ने हृदय-प्रशांत क्षेत्र में यूरोपीय देशों के साथ काम करते हुए क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग के संदर्भ में उत्तर-औपनिवेशिक काल के मानसिक द्वन्द्वको पीछे छोड़ दिया है।
 - [द्वितीय विश्व युद्ध](#) (Second World War) के बाद [शीत युद्ध](#) (Cold War) की द्विध्रुवीय व्यवस्था (पूर्व-पश्चिम आयाम) और उत्तर-दक्षिण ढाँचे (विकासशील बनाम विकसित देश) ने भारत को यूरोप की राजनीतिक स्वायत्तता के बारे में अधिक गहन दृष्टिकोण अपनाने से रोक रखा था।

चुनौतियाँ:

- भिन्न दृष्टिकोणों का समेकन: कई बहुपक्षीय मंचों पर यूरोपीय संघ के एक बड़ी शक्ति होने के बावजूद इसमें शामिल देशों की विदेश नीतिको सभी पहलुओं में समन्वय स्थापित करने में कई मतभेद हैं।
 - उदाहरण के लिये [ब्रेक्सिट](#) (Brexit) के बाद यूके (UK) एक स्वतंत्र विदेशी नीतिको (यूरोपीय संघ के अन्य देशों के प्रभावों से मुक्त) का अनुसरण करते हुए अपने लिये एक नई अंतरराष्ट्रीय भूमिका गढ़ना चाहता है।
- पूर्व के विवाद: पश्चिमी हृदय-महासागर क्षेत्र में वडिपनिवेशीकरण काल से संबंधित फ्रांस और ब्रिटेन के मध्य कुछ विवाद अभी भी बने हुए हैं।
- चीन से सीधा टकराव: [क्वाड](#) (QUAD) समूह के तहत विश्व की चार लोकतांत्रिक और महत्वपूर्ण शक्तियों के साथ आने तथा उनके द्वारा साझा नौसैनिक अभ्यास ([मालाबार नौसैनिक अभ्यास](#) के तहत) को चीन अपनी घेराबंदी के प्रयास के रूप में देखता है।

- इसी प्रकार यूरोपीय देशों का हृदि-प्रशांत क्षेत्र में शामिल होना, चीनी आक्रामकता में तेज़ी का कारण बन सकता है।
- चीन के साथ यूरोपीय देशों की आर्थिक साझेदारी को देखते हुए इस बात की संभावना बहुत ही कम है कि यूरोप शीघ्र ही हृदि-प्रशांत रणनीति में अपनी शक्ति का वस्तुतः शुरु कर देगा।

आगे की राह:

- **भू-आर्थिक सहयोग:** भारत यूरोपीय देशों को सैन्य दृष्टिकोण से न सही परंतु आर्थिक रूप से हृदि प्रशांत क्षेत्र में अपनी भागीदारी बढ़ाने के लिये प्रेरित कर सकता है।
 - भारत हृदि-प्रशांत वमिश को दशा देने के लिये राजनीतिक प्रभुत्व और अपनी महत्त्वपूर्ण **सॉफ्ट पॉवर** का लाभ उठाने के अतिरिक्त क्षेत्रीय अवसंरचना के सतत् विकास के लिये बड़े पैमाने पर आर्थिक संसाधन जुटाने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।
- **भारत-ईयू व्यापार संधि को अंतिम रूप देना:** भारत और यूरोपीय संघ (EU) द्वारा काफी समय से एक मुक्त व्यापार संधि पर चर्चा की जा रही है परंतु यह वर्ष 2007 से ही लंबित है।
 - ऐसे में भारत और ईयू के बीच वभिन्न क्षेत्रों में बेहतर समन्वय बनाने के लिये दोनों पक्षों को शीघ्र ही इस मुक्त व्यापार संधि को अंतिम रूप देने पर कार्य करना होगा।
- **महत्त्वपूर्ण शक्तियों के साथ सहयोग:** वर्ष 2018 की शुरुआत में फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन की भारत की यात्रा ने रणनीतिक साझेदारी को फरि से जीवंत करने के लिये एक व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की।
 - फ्रांस के साथ भारत की साझेदारी को अब हृदि-प्रशांत के दृष्टिकोण के माध्यम से एक मज़बूत क्षेत्रीय आधार प्राप्त हुआ है।
 - साथ ही फ्रांस पश्चिमी हृदि महासागर और दक्षिण प्रशांत महासागर में अपने द्वीपों तथा ऐतिहासिक सैन्य उपस्थिति के माध्यम से चीन के समुद्री वस्तुतः से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को शीघ्र ही पहचानने में सक्षम होगा।
 - इसके अतिरिक्त भारत को अन्य मध्यम शक्तियों को शामिल करने वाले बहुपक्षीय समूहों (जैसे भारत-ऑस्ट्रेलिया-जापान फोरम और फ्रांस व ऑस्ट्रेलिया के साथ त्रिपक्षीय वार्ता आदि) के एक नेटवर्क के माध्यम से अमेरिका के साथ अपनी साझेदारी को अतिरिक्त बल प्रदान करने पर विशेष ध्यान देना होगा।

नबिकर्ष:

यदि संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सुरक्षा सहयोग में वृद्धि इस दशक में भारतीय वदिश नीतिकी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बन गई है, तो भारत के लिये यूरोपीय देशों के लिये अपनी रणनीतिक पहल को एकीकृत करना आगामी दशक का एक प्रमुख उद्देश्य होना चाहिये।

अभ्यास प्रश्न: यूरोपीय देशों के साथ क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को बढ़ाना वर्तमान में भारत की एक रणनीतिक आवश्यकता बन गया है। टपिणी कीजिये।